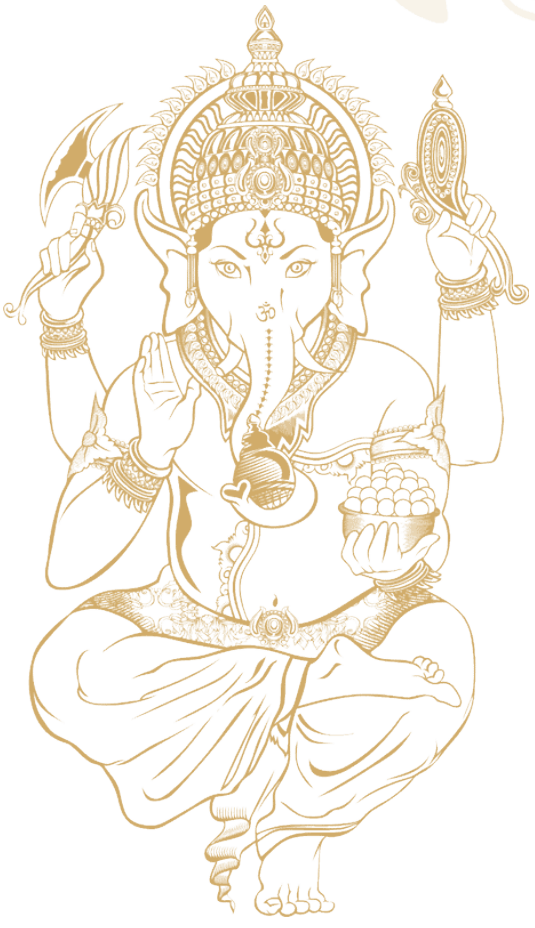

Siddhartha bhati

Dikshita sahoo

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121356202

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
15/12/1996	जन्म तिथि	5-06/02/2002
रविवार	दिन	मंगल-बुधवार
घंटे 23:10:00	जन्म समय	03:30:00 घंटे
घटी 40:08:25	जन्म समय(घटी)	50:56:32 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Bhubaneswar
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	20:13:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	85:50:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	00:13:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:06:37	सूर्योदय	06:21:24
17:25:52	सूर्यास्त	17:40:07
23:48:53	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:55

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
राहु 15वर्ष 5मा 22दि	15:52:13	सिंह	लग्न	धनु	08:26:17	शनि 9वर्ष 9मा 26दि
गुरु	00:13:43	धनु	सूर्य	मक	23:02:39	बुध
08/06/2012	08:32:06	कुंभ	चंद्र	वृश्चि	09:46:27	03/12/2011
08/06/2028	29:15:46	सिंह	मंगल	मीन	19:08:54	02/12/2028
गुरु 27/07/2014	20:36:28	धनु	बुध व	मक	05:15:34	बुध 01/05/2014
शनि 06/02/2017	27:40:16	धनु	गुरु व	मिथु	12:39:44	केतु 28/04/2015
बुध 15/05/2019	04:19:14	वृश्चि	शुक्र	मक	28:25:25	शुक्र 26/02/2018
केतु 20/04/2020	06:55:47	मीन	शनि व	वृष	14:09:13	सूर्य 02/01/2019
शुक्र 20/12/2022	10:29:17	कन्या व	राहु	मिथु	02:05:42	चन्द्र 03/06/2020
सूर्य 08/10/2023	10:29:17	मीन व	केतु	धनु	02:05:42	मंगल 31/05/2021
चन्द्र 06/02/2025	08:36:11	मक	हर्ष	कुंभ	00:29:13	राहु 18/12/2023
मंगल 13/01/2026	02:26:30	मक	नेप	मक	14:53:42	गुरु 25/03/2026
राहु 08/06/2028	09:59:20	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	23:14:24	शनि 02/12/2028

लग्न-चलित

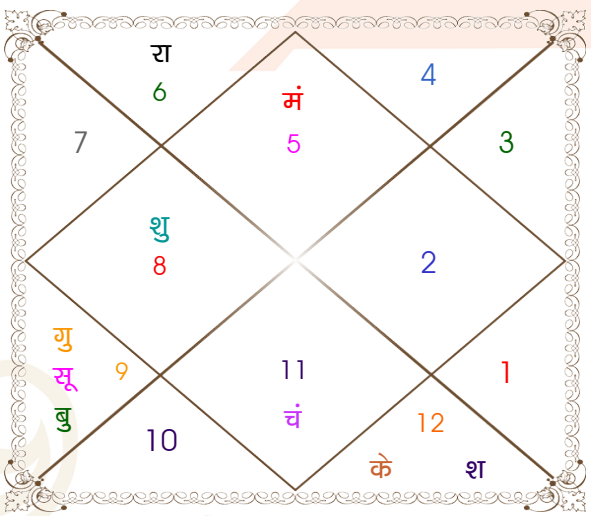

लग्न-चलित

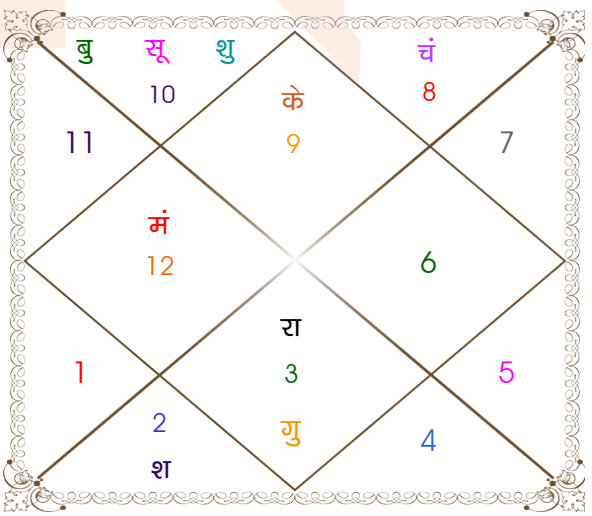

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	कीटक	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	मृग	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	22.00		

ैपककींतजीं ईींजप का वर्ग मार्जार है तथा Dikshita sahoo का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारैपककींतजीं ईींजप और Dikshita sahoo का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

ैपककींतजीं ईींजप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

Dikshita sahoo मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Dikshita sahoo कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ैपककींतजीं ईींजप तथा Dikshita sahoo में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।